



## महिला श्रम बल भागीदारी एवं कैरियर संतुष्टि पर एक पंचायत स्तरीय तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. मनीषा कुमारी

Ph.D LNMU दरभंगा गृहविज्ञान विभाग

I.G.R.S.L.N कॉलेज जितवरिया

**1.1 सारांश:-** प्रस्तुत शोध विषय बिहार राज्य में महिलाओं के श्रमबल भागीदारी एवं कैरियर संतुष्टि का व्यापक अध्ययन किया गया है। 2011 जनगणना के अनुसार बिहार में महिलाओं की जनसंख्या 4.98 करोड़ रही (1000 पुरुषों पर 918 महिलाएँ)। जातीय जनगणना 2023 के अनुसार 953 महिलाएँ 1000 पुरुषों के मुकाबले पायी गईं। महिला श्रमबल भागीदारी वर्ष 2023-24 में 20.30% रही है। केन्द्रीय सांख्यिकी कार्यक्रम क्रियान्वयन मंत्रालय रिपोर्ट के अनुसार 84.04% महिलाएँ गृह दक्षता कुशल भागीदारी निभाती हैं। पंचायती राज संस्थाओं में 50% आरक्षण के साथ महिलाएँ नेतृत्व क्षमता में सक्रिय हैं। इसके अलावे महिला उद्यमी योजना, जिविका खेती पशुपालन, मनरेगा, सरकारी नौकरी एवं अन्य क्षेत्रों में भी सक्रिय रूप से क्रियाशील हैं। पंचायत स्तर पर चुनिंदा 70 महिला उत्तरदाताओं ने स्थानीय कार्य को प्राथमिकता दी। सार्वजनिक एवं नीजी क्षेत्र में वेतनभोगी पदों को प्राथमिकता दी जाती है अक्सर महिलाओं के लिए कार्यस्थल पर कार्य आवंटन में भेदभाव, मातृत्व अवकाश के कम अवसर कार्य जीवन संतुलन की चुनौतियाँ कैरियर प्रगति में बाधक बनती हैं। कार्यकारी महिलाओं की बहुत निम्न संख्या सरकारी आंकड़ों में मौजूद है। ज्यादातर महिलाएँ असंगठित क्षेत्र में काम करती हैं तथा कार्य बदलना चाहती हैं। पारिवारिक दायित्व का निर्वहन निःशुल्क एवं दोहरा कार्यभार है जिसमें थकान एवं स्वयं के लिए समय अभाव होता है। महिलाओं को दो विकल्प पारिवारिक दायित्व एवं कैरियर निर्माण में से एक के चुनाव का अवसर नहीं होता है यहाँ तक की वह पौष्टिक भोजन, आर्थिक सुरक्षा आराम आदि से वंचित रहती हैं। ऐसा कोई राज्य नहीं है जहाँ महिलाओं को समान काम समान वेतन मिलता है। हालांकि बहुत सारे कैरियर विकल्पों में समान वेतन सुविधाएँ हैं। प्रस्तुत शोध के माध्यम से चुनिंदा पंचायत की वर्तमान स्थिति की तुलना बिहार राज्य एवं देश स्तरीय श्रम बल रिपोर्ट से तुलना की जाएगी जो नीति निर्माताओं सामाजिक संगठनों के लिए मार्गदर्शन एवं सिफारिशें प्रदान की जाएगी ताकि महिलाओं की कार्य क्षमता एवं श्रमबल का उचित संघ राष्ट्र हित में उपयोग हो।

**शब्द कूट :** - महिला श्रम बल, कैरियर संतुष्टि, कार्य जीवन संतुलन, समान कार्य समान वेतन तुलनात्मक अध्ययन,

**1.2 प्रस्तावना :-** बिहार की अर्थव्यवस्था में श्रमबल भागीदारी ही विकास का इंजन है। श्रम बल में महिलाओं की भागीदारी से विकासशील देशों की उभरती अर्थव्यवस्था को बल मिलता है परन्तु बिहार जैसे उच्च जनसंख्या धनत्व वाले राज्य में महिलाओं की भागीदारी और विकास बेहद धीमी गति से चल रही है। भारत में सांख्यिकी मंत्रालय की सर्वेक्षण रिपोर्ट 2017-18 में शहरों में कुल 52.1% महिलाएं तथा 45.7% पुरुष कामकाजी हैं ग्रामीण क्षेत्र में महिलाएं नौकरी में पुरुषों पुरुषों से पीछे हैं। भारत में कामकाजी महिलाओं की स्थिति \* 1 दृष्टि आईएस (2019)

टेबल A

2017-18	2011-12
नौकरी 52.1 %	42.8%
स्वरोजगार - 34.7%	42.8%

बिहार के सांख्यिकी मंत्रालय की महिला श्रमबल रिपोर्ट के अनुसार 2023-24 में 20.30% महिलाएं कार्य में सहभागी हैं | जिसमें शहरी क्षेत्रों में 12.2% तथा ग्रामीण क्षेत्र में 21.1% है। \*2 प्रभात खबर (21 अप्रैल 2025)

भारत और बिहार महिला श्रमबल रिपोर्ट का तुलनात्मक अध्ययन में हम पाते हैं कि बिहार देश के औसत से काफी कम है।

**साहित्यिक समीक्षा :-** अंतराष्ट्रीय श्रम संगठन (आईएलओ) 2013 के अनुसार व्यक्ति का संबंध उम्र सीमा के अन्दर कार्य अभाव व उचित पारिश्रमिक न मिलना तथा स्वरोजगार के अभाव से है। औसतन महिलाओं के जीवन के महत्वपूर्ण 10 वर्ष 2 बच्चों के पालन पोषण एवं देखभाल को समर्पित होते हैं।

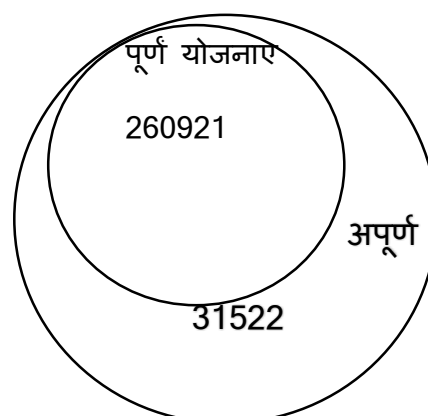
टेबल-2 बिहार इकोनॉमिक सर्वे 2024-25 के अनुसार \* 3 बिहार इकोनॉमिक सर्वे 2024-25

जीडीडीपी / कैप्टा रु०			एनडीडीपी / कैप्टा रु०	
	वर्तमान	स्थिर	वर्तमान	स्थिर
दरभंगा-	52792	30966	47401	27317
बिहार	59244	33763	53478	2909

बिहार की जीडीपी एवं एनडीडीपी में दरभंगा का योगदान सराहनीय है।

दैनिक भास्कर रिपोर्ट के अनुसार दरभंगा जिला में 31 हजार 522 योजनाएं अधूरी हैं। \*4 दैनिक भास्कर (26 अप्रैल 2024)

कुल योजना - 2 लाख 92 हजार



मनरेगा में दरभंगा जिला में लिंगवार कुशल - अर्धकुशल पंजीकृत श्रमिक राज्य बिहार

## \* 5 भारत सरकार ग्रामीण विकास मंत्रालय

टेबल - 3

कुशल		अर्धकुशल	
पुरुष कार्य कर्ता	महिला कार्य कर्ता	पुरुष	महिला
27037	2262	6266	5322

टेबल - 4 बलहा पंचायत में पंजीकृत श्रमिकों की संख्या - 4310

सक्रिय श्रमिक - 3056

कुल कार्यरत परिवार 1885 - 1885

महिला व्यक्ति दिवस %	प्रति परिवार प्रदान किये गये औसत दिन	प्रति व्यक्ति औसत मजदूरी	वित्त वर्ष 2024-
25 - 57.33	44.9	227.68	रु०
वित्त वर्ष 2023-24 - 57.1	45.88	225.89	रु०

उपरोक्त डाटा रिपोर्ट विश्लेषण के आधार पर स्पष्टतः कहा जा सकता है दरभंगा जिला में योजनाएं अधूरी हैं। श्रमबल में महिलाओं की संख्या पुरुषों के मुकाबल काफी कम है, कौशल विकास प्रशिक्षित महिलाओं की स्थिति चिंतनीय है। अर्धकुशल श्रमबल में भी महिलाएं काफी पीछे हैं। बलहा पंचायत में महिलाओं का कार्यदिवस औसत से अधिक दोनों वित्तीय वर्ष में रहा है परन्तु पंजीकृत श्रमिकों की संख्या अत्यंत कम है कार्यरत परिवार की कि संख्या और भी कम है अर्थात् सरकारी आकड़ों से अलग जमीनी स्तर पर असंगठित क्षेत्र में कार्य श्रमबल सक्रिय है क्योंकि औसत कार्य दिवस की संख्या भी अत्यंत कम है। अतः बलहा पंचायत से सर्वेक्षण की आवश्यकता है।

**महिला श्रम बल भागीदारी में कमी के कारण:-**

i) घरेलू कार्य का बोझ:- महिलाएं घर एवं परिवार की सम्पूर्ण जिम्मेदारी निभाती हैं औसतन प्रतिदिन 16-18 घंटे तक कार्य भार होता है। काम के लम्बे घंटे महिलाओं में थकान और कार्य के प्रति अरुचि पैदा करते हैं। जिससे मौलिक सोच एवं अन्य समस्याओं तथा रोजगार की ओर ध्यान नहीं जाना है।

(ii) पितृसत्तात्मक सामाजिक मानदण्ड - खासकर बिहार में पितृ सत्ता है। सामाजिक मानदण्डों में महिलाओं को घर से बाहर काम करने को अमर्यादित माना जाता है। महिलाएं पहले घर की सम्पूर्ण जिम्मेदारी निभाती हैं तथा जब समय मिले तब अन्य कार्य की कर सकती हैं। घर को बेहतर ढंग से संभालने का दबाव पुरुषों घर नहीं होता अतः ज्यादातर महिलाएं केवल घर परिवार की देखभाल करती हैं।

(iii) शिक्षा एवं रोजगार के कम अवसर:- ग्रामीण महिलाओं में शिक्षा का स्तर रोजगार परक नहीं है बिहार राज्य में शिक्षा में महिला साक्षरता दर 53.53% औसत है। भारतीय राज्यों में बिहार की ग्रामीण साक्षरता दर सबसे कम है भले बिहार में पिछले कुछ दशकों में साक्षरता दर में सुधार हुआ है \*7कुमार (एस (2025)

(iv) उच्च जनसंख्या घनत्व से रोजगार के कम अवसर:- विहार राज्य में जनसंख्या घनत्व अधिक है संसाधनों की कमी है। राज्य में 1106 व्यक्ति प्रति वर्ग किलो मीटर निवास करते हैं \*8 भारतीय राष्ट्रीय पोर्टल जिसके परिणाम स्वरूप रोजगार के अवसर में कमी तथा पलायन है। मानव संसाधनों में कुशल रोजगार तथा जनसंख्या एका तालमेल आवश्यक है।

(v) प्रतिव्यक्ति उपयोग व्यय, बचत, निवेश के प्रति जागरूकता एवं जानकारी न होना अर्थ उपार्जन का दबाव और बढ़ा देता है।

\*9 सिंह पुष्पा एवं चन्द्र अंजली (2022)

### 1.3 शोध उद्देश्य:-

- बलहा पंचायत की महिलाओं की चरमबले भागीदारी जात करना।
- महिलाओं का कार्य लगाव या अलगाव का कारण पता लना तथा रुचिपूर्ण कार्य तलाश में मदद करना।
- सामाजिक मानदंडों एवं निति निर्धारक संस्थाओं को महिलाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण की ओर ध्यान आकर्षित करना।
- संतुष्ट पारिवारिक प्जीवन के लिए महिलाओं को स्वास्थ्य सुरक्षा एवं बौद्धिक क्षमता वृद्धि की ओर ध्यान केन्द्रित करने का प्रयास करना।

**1.4 शोध प्राकल्पना :-** एक परिकल्पना दो या दो से अधिक चरों के बीच स्थित संबंधों से अवगत करने या वर्तमान परिस्थिति या प्रक्रिया के संबंध में अन्तः दृष्टि प्रदान करने के लिए प्रयुक्त एक ऐसी बुद्धिमत्ता पूर्ण सुनियोजित अनुमान, कल्पनात्मक समाधान या धारणा है जिसे घोषणात्मक कथनों के रूप में लिखा जाता है। \*10 मंगल.एस, के, शुभा. (2017)

प्रस्तुत परिकल्पना H<sub>1</sub> परिवार में महिला एवं पुरुष दोनों पर समान कार्य भार रहने से संतुलन बना रहेगा।

H<sub>2</sub> बिहार राज्य में पुरुषों की तुलना में महिलाएं कमतर हैं, पितृसत्तात्मक समाज का दबाव महिलाओं के आर्थिक उन्नति में बाधक है।

H<sub>3</sub> घरेलू कार्य भार समय वैतनिक कार्य घंटों से अधिक तथा उबाऊ है।

H<sub>4</sub> अधिकांश कामकाजी महिलाएं दोहरी भागीदारी (पारिवारिक देखभाल एवं वेतनिक कार्य) चुनौतिपूर्ण मानती है।

शोध के माध्यम से अनुसंधान प्रयासों द्वारा सत्यता सिद्ध करने का प्रयास किया जाएगा।

**1.5 अध्ययन क्षेत्र एवं प्रविधि :** दरभंगा जिला के अन्तर्गत बलहा पंचायत से 70 उत्तरदाताओं का निदर्शन विधि द्वारा चयन किया गया। साक्षात्कार के दौरान निरीक्षण पद्धति का उपयोग किया गया है। विभिन्न द्वितीयक स्रोत समाचार पत्र, रिपोर्ट, जर्नल्स एवं पुस्तक एवं सर्वे रिपोर्ट के साथ तुलनात्मक विश्लेषण किया गया है।

**1.6 परिणाम :-** साक्षात्कार से प्राप्त आंकड़ों का संग्रह किया गया तथा तथ्य समंको को सारणीकृत किया गया। सारणीकरण के पश्चात कोटिबद्ध किया गया।

उदाहरणार्थ:

तालिका - 1. पारिवारिक स्थिति एवं आकार

क्रम संख्या	परिवार के व्यस्क सदस्य	कुल संख्या	उम्र
1.	महिला	30	20-50 वर्ष
2.	पुरुष	40	20-50 वर्ष

तालिका-2. सूचनादाताओं का शैक्षणिक स्तर

क्रम संख्या	निरक्षर	(दसवी तक)	ग्रेजुएट	उच्च शिक्षा या पोस्ट ग्रेजुएट से ऊपर	N
1	18	32	17	3	70

तालिका - 3. सूचनादाताओं की आय

क्रम संख्या	महिला/पुरुष	10 हजार से कम	25 हजार से ज्यादा	50 से ज्यादा	बेरोजगार अवेतनिक
1.	महिला	5	3	2	20



2.	पुरुष	10	12	6	12
----	-------	----	----	---	----

तालिका- 4 सूचनादाताओं के कार्य की जानकारी

क्रम से	सरकारी नौकरी	स्वरोजगार	दैनिक मजूदरी	गृहकार्यी	N
1 महिला	2	4	4	20	30
2 पुरुष	6	14	10	10	40

तालिका-5 सूचनादाताओं की पोषण संबंधी जानकारी

	महिला	पुरुष
जानकारी रखते हैं	7	12
जानकारी नहीं है	13	10
अनियमित पता नहीं	10	18
N-	30	40

तालिका-6 सूचनादाताओं द्वारा कार्य के प्रति फीडबैक

	महिला	पुरुष
संतुष्ट	10	22 - 32
असंतुष्ट	14	10 - 24
पता नहीं	6	8 - 14

उपरोक्त तालिका - 1 अवलोकन उपरान्त स्पष्ट है कि 70 सूचनादाता में से 30 महिलाएं तथा 40 पुरुष जो परिवार के मुख्य सदस्य से जानकारी ली गई है।

तालिका 2

उत्तर दाताओं की शैक्षणिक स्थितिक अवलोकन से स्पष्ट है सबसे कम संख्या में उच्चशिक्षा प्राप्त उत्तरदाता है। तकनी शिक्षा प्राप्त उत्तरदाता एवं ग्रेजुएट उत्तरदाता की संख्या लगभग समान है अतः रोजगार एवं व्यवसाय में दोनों के लिए सामान अवसर वितरित होने की सम्भावना है। निम्नतम 10 वीतंक सावर की संख्या सबसे अधिक है।

तालिका -3

महिलाओं और पुरुषों के आय आय के के मामले में महिला में अवैतानिक कार्य का प्रतिशत सबसे अधिक है। तथा अध्यय क्षेत्र में बेरोजगारी दर भी अधिक है जो आर्थिक विकास के लिए बाधक है ।

तालिका-4

सूचनादाताओं के कार्य में महिलाएं सबसे अधिक सक्रिय भूमिका में है। पुरुष पुरुष वर्ग पूर्ण दैनिक दैनिक मजदूरी व स्वरोजगार में आगे है सरकारी नौकरी में महिलाओं का प्रतिशत कम है ।

तालिका-5

पोषण के प्रति महिलाओं की जानकारी पुरुषों से अधिक है नहीं है पुरुषों का पोषण के प्रति व्यवहार अनियमित है ।

तालिका-6

सूचनादाताओं द्वारा कार्य के प्रति फीडबैक में ज्यादातर महिला असंतुष्ट हैं तथा संतुष्ट पुरुष अधिक संख्या में हैं साक्षात्कार के दौरान असंतुष्टि का कारण पारिवारिक जिम्मेदारी की प्राथमिकता, असमान वेतन घर और कार्य स्थल की दूरी, दोहरी जिम्मेदारी आदि बताया गया है।

### 1.7 निष्कर्ष:

प्रस्तुत शोध महिला श्रमबल भागीदारी एवं कैरियर संतुष्टि का देश, राज्य जिला एवं पंचायत स्तर पर उपलब्ध द्वितियक डाय एवं सर्वेक्षण आधारित प्राथमिक डाटा के तुलनात्मक अध्ययन से हम पाते हैं कि महिलाओं का श्रमबल भागीदारी में बहुत ही कम योगदान है। महिलाएं शैक्षणिक और अर्थिक रूप से कमजोर हैं इस प्रकार नौकरी एवं व्यवसाय में भी उनकी संख्या का प्रतिनिधित्व कम है।

दैनिक घरेलू जिम्मेदारी से संतुष्ट महिलाएं कैरियर को दूसरे स्थान पर रखती हैं अवैतनिक कार्य वोझ अवहेलना तिरस्कार के साथ महिलाओं को रोजगार के प्रति जागरूक करता है वे साक्षात्कार के प्रश्नों में स्पष्ट करती हैं गृह कार्य निरस, अवैतनिक और प्रेयटीन है इस भाव के साथ जिन्दगी नहीं काटी जा सकत आज महिलाएं दोहरी जिम्मेदारी के लिए तैयार हैं। महिलाएं प्रशिक्षित होना चाहती हैं विभिन्न व्यवसाय अथवा सक्रिय नौकरी की जिम्मेदारी के लिए सक्षम हैं।

### 1.8 सलाह एवं सुझाव -

महिला श्रमबल भागीदारी पूर्ण रूप से सफल हो इसके लिए पारिवारिक सामाजिक एवं, सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों को सुराहीत वातावरण के साथ सार शिक्षा एवं कौशल प्रशिक्षण, वित्तीय सहायता सुविधाएं, समान कार्य एवं वेतन के अवसर, वर्कफ्रॉम रोम, मातृत्व अवकाश जैसी जैसी नितियों को को बढ़ावा देना चाहिए। स्तर पर महिलाओं के लिए 50% सभी विभागों में सरकार आरक्षण मिलना चाहिए।

कैरियर संतुष्टि - कार्य जीवन संतुलन तकनीक सबसे कारगर उपाय के रूप में उभर रहा है स्वास्थ्य एवं पोषण के प्रति स्वयं के लिए समय निकाला जा सकत है। सामाजिक अपेक्षाओं की पूर्ति अपनी इच्छाओं की कीमत पर न करें व्यक्तिगत विकास एवं अपने अधिकारों के प्रति जागरूक रहना चाहिए।

### संदर्भ सूची: -

1. दृष्टि आई ए एस. भारत में महिला श्रमबल भागीदारी. 24 जून 2019 drishtiiias.com .
2. रंजन, प्रकाश. बिहार में महिला श्रमबल भागीदारी दर वर्ष 2023-20 में बढ़कर 20.30% हो गई है. प्रभात खबर 21 अप्रैल 2025 . [www.prabhatkabar.com](http://www.prabhatkabar.com) .
3. बिहार इकोनॉमिक सर्वे (2024-25) पेज - 25 <https://state.bihar.gov.in> .
4. दैनिक भास्कर. दरभंगा में मनरेगा की शुस्त पड़ी चाल (26 अप्रैल 2024 ) [www.bhaskar.com](http://www.bhaskar.com) .5. भारत सरकार ग्रामीण विकास मंत्रालय मनरेगा.nreganarep.nic.in .
6. वही. nreganarep.nic.in . पृ० - 303
7. कुमार एस. (2025) वुमेन एम्पावरमेंट : एविडेन्स फ्रॉम इंडियन एंड अफ्रीकन एडुकेशनल सिस्टम ए केस स्टडी ऑफ बिहार एंड सुडान.इंटरनेशनल जनरल ऑफ लिटरेसी एंड एडुकेशन 5(1):20-26
8. भारतीय राष्ट्रीय पोर्टल india.gov.in .
9. सिंह, पुष्पा एवं चन्द्रा, अंजली " बिहार में बेरोजगारी की समस्याएं एवं प्रभावित जीवन स्तर का विश्लेषण. इंटरनेशनल जर्नल ऑफ नोवेल रिसर्च एण्ड डेवलपमेंट ISSU (3,7) ISSN-24564184 .
10. मंगल. एस, के एवं मंगल. शुभ (2017) व्यवहारिक विज्ञानों में अनुसंधान विधियाँ , पी एच आई लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड दिल्ली पृ - 267 .